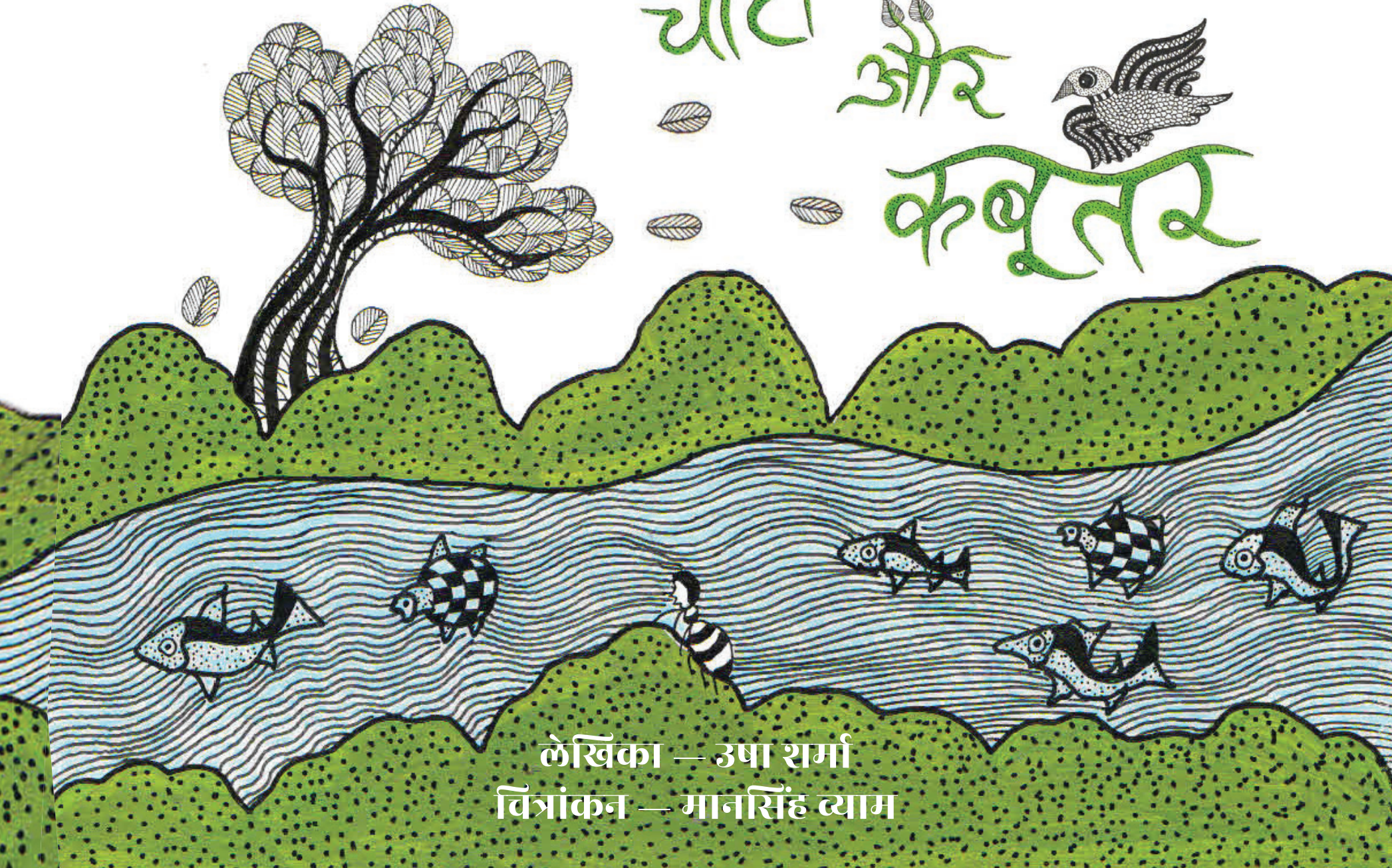


चीटी और कबूतर



लेखिका — उषा शर्मा
चित्रांकन — मानसिंह व्याम

21204—चींटी और कबूतर

ISBN 978-93-5292-673-2

प्रथम संस्करण

जनवरी 2025 पौष 1946

PD 5T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, 2025

₹ 20.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर
पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन
प्रभाग में प्रकाशित तथा सुप्रीम ऑफ़सेट प्रैस, 133, उद्योग
केन्द्र-I, ग्रेटर नोएडा द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पच्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैपस, श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे,
बनाशंकरा III इस्टेज, बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन,
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैपस, निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. वी. श्रीनिवासन
मुख्य संपादक : विज्ञान सुतार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : जहान लाल
मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार
सहायक संपादक : मीनाक्षी
उत्पादन अधिकारी : सुनील शर्मा

आवरण एवं चित्रांकन
मानसिंह व्याम

ले आउट
डिजिटल एक्सप्रेस

सहयोग हेतु आभार ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) रचनाकारों, उनके परिजनो, संस्थानों या प्रकाशकों के प्रति आभारी है जिन्होंने अपनी रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

परिषद्, रचनाकार, चित्रांकनकर्ता, एकलव्य, एकतारा संस्थाओं, अंजलि तिवारी, वेलफेयर अधिकारी, समाज कल्याण विभाग, दिल्ली; अयाज अहमद, डी.टी.पी. ऑपरेटर, सीआईईटी, रा.शै.अ.प्र.प.; नई दिल्ली; किरण, पूर्व जेपीएफ, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; मोहम्मद आतिर, पूर्व ग्राफिक डिजाइनर, सीएनसीएल, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; योगेश प्रताप सिंह वर्मा, डी.टी.पी. ऑपरेटर, सीएनसीएल, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सीमा शर्मा, पूर्व वरिष्ठ परामर्शदाता, प्रारंभिक शिक्षा, विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, पुस्तक को वर्तमान स्वरूप प्रदान करने हेतु प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों पारुल त्यागी और शिव मोहन यादव, सहायक संपादक (संविदा); सुरेन्द्र कुमार, प्रभारी, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; मोहन सिंह, डी.टी.पी. ऑपरेटर (संविदा); के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

समीक्षा हेतु आभार ज्ञापन

अक्षय कुमार दीक्षित, मेंटर, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली; नीरा नारंग, आचार्य, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; प्राची कालरा, सहायक आचार्य, गार्गी कॉलेज, नई दिल्ली; मालविका राय, शिक्षाविद्, नई दिल्ली; मुकुल प्रियदर्शिनी, सह-आचार्य (सेवानिवृत्त), मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; वर्षा सिंघल, शिक्षिका, केंद्रीय विद्यालय, कोकराझार, असम; श्वेता उप्पल, पूर्व मुख्य संपादक, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; संध्या सिंह, आचार्य, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सोनिका कौशिक, सहायक आचार्य, जीसस एंड मैरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; स्नेहा सबनिस, अनुवादक, राजभाषा संचालनालय, गोवा सरकार।

कहानियाँ बच्चों को पढ़ने का आनंद देती हैं और साथ ही कुशल बुद्धि, समस्या समाधान एवं तार्किक विश्लेषण की क्षमता का संवर्धन भी करती हैं। फाउंडेशनल और प्रीप्रेटरी स्टेज के बच्चों एवं शिक्षकों के लिए कहानियाँ भाषायी कौशलों एवं आस-पास मौजूद विभिन्न अवधारणाओं को सीखने में भी सहायता करेंगी। कहानियों में आए चित्र बच्चों को अनुमान लगाकर पढ़ने और उन्हें अपने अनुभव संसार से जोड़ते हुए अपनी बात कहने का अवसर तथा आत्मविश्वास भी देते हैं। किसी कहानी का कोई पात्र या घटना बच्चों के जीवन एवं चिंतन को प्रभावित भी कर सकता है और बच्चे उनके साथ तादात्म्य भी स्थापित कर सकते हैं। पढ़ी गई कहानी को अपनी कल्पना के आधार पर आगे बढ़ाने, अपनी कहानी स्वयं रचने का अवसर भी उपलब्ध होगा। कहानियाँ बच्चों को स्वतंत्र पाठक और सृजनशील लेखक बनने में सहायता करेंगी।

उषा शर्मा

आचार्य एवं कार्यक्रम समन्वयक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

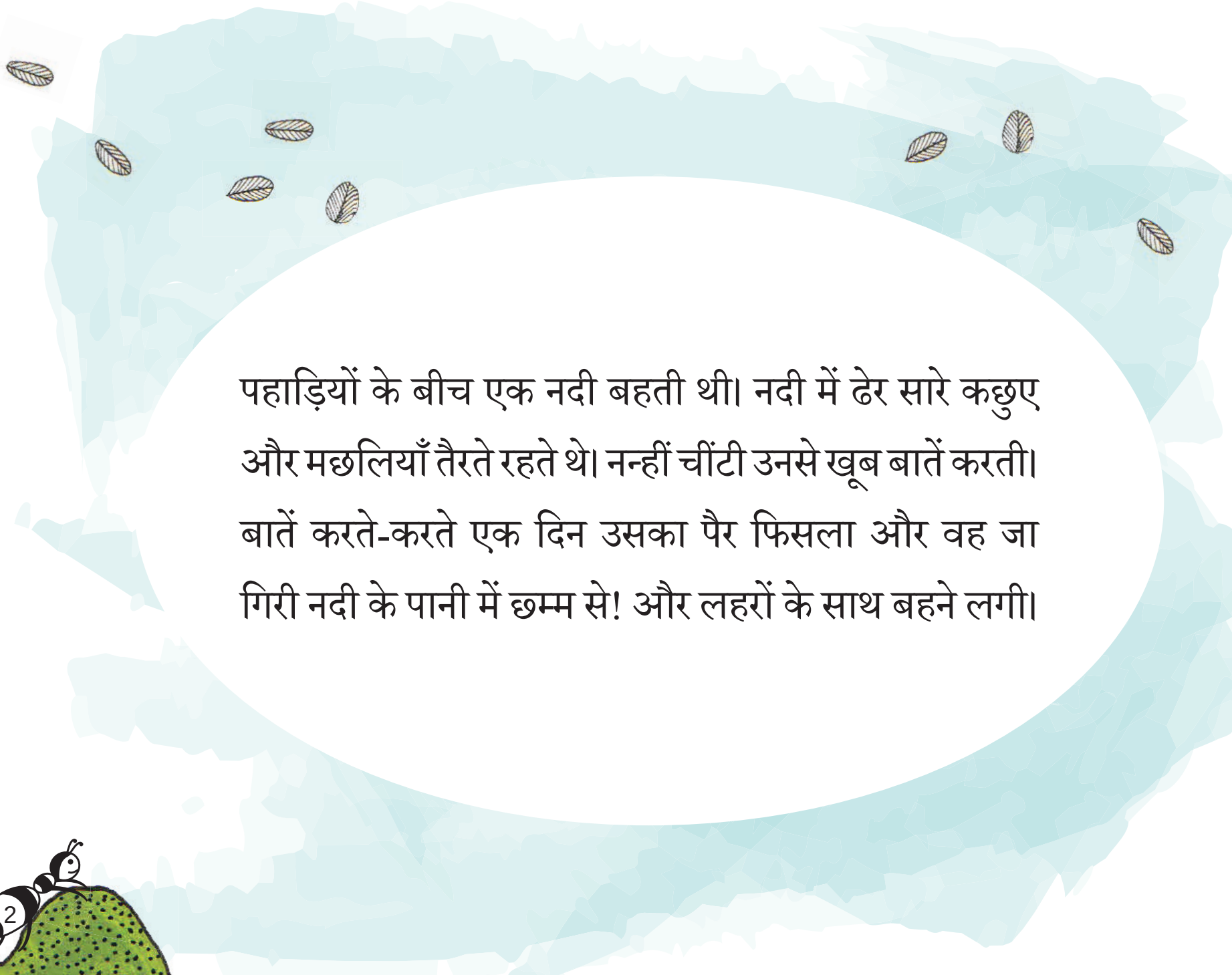


दोस्ती हो तो चींटी और कबूतर जैसी।
जानने के लिए पढ़ें...

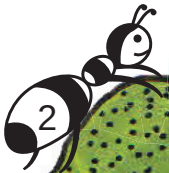
लेखिका — उषा शर्मा
चित्रांकन — मानसिंह व्याम

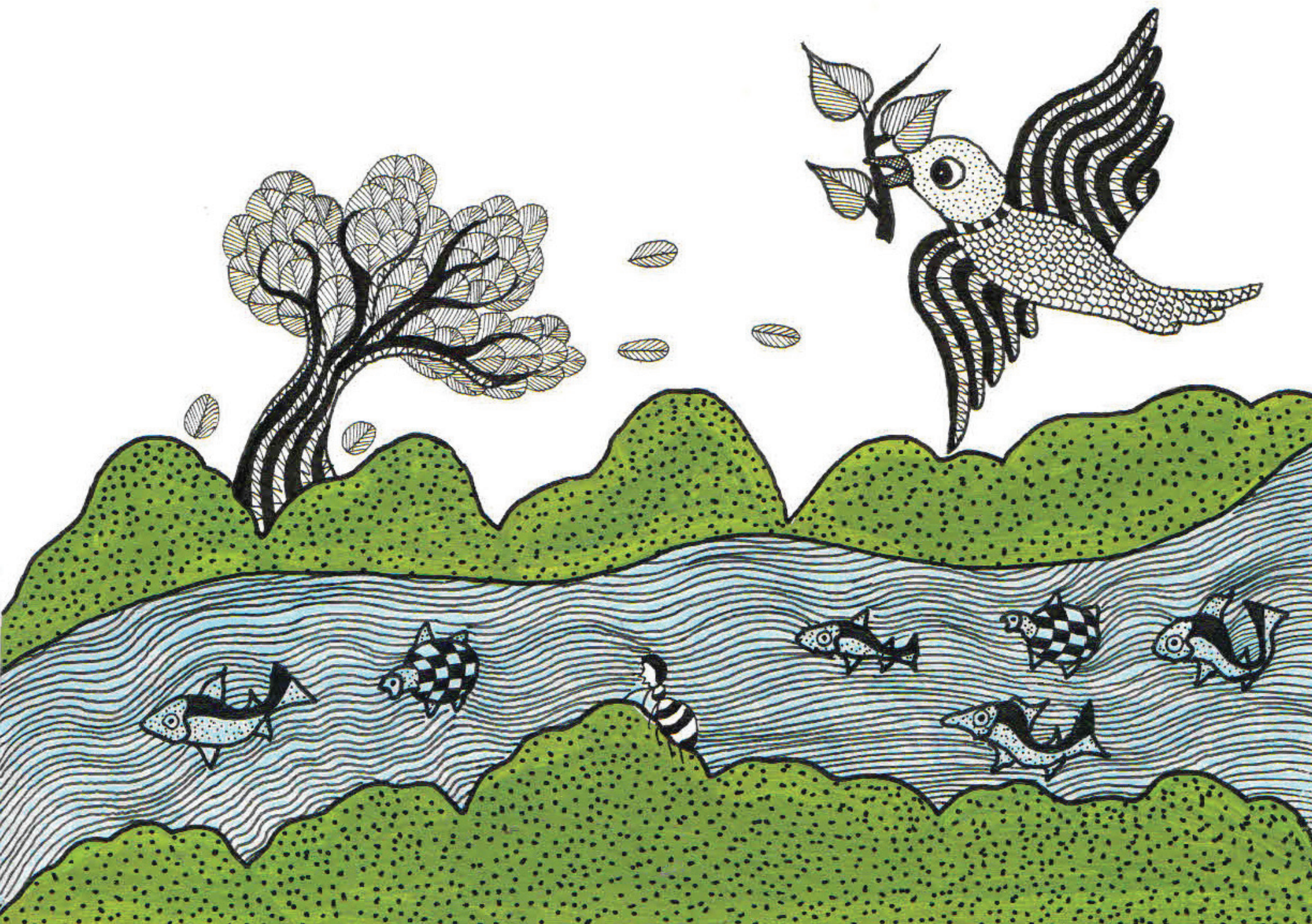


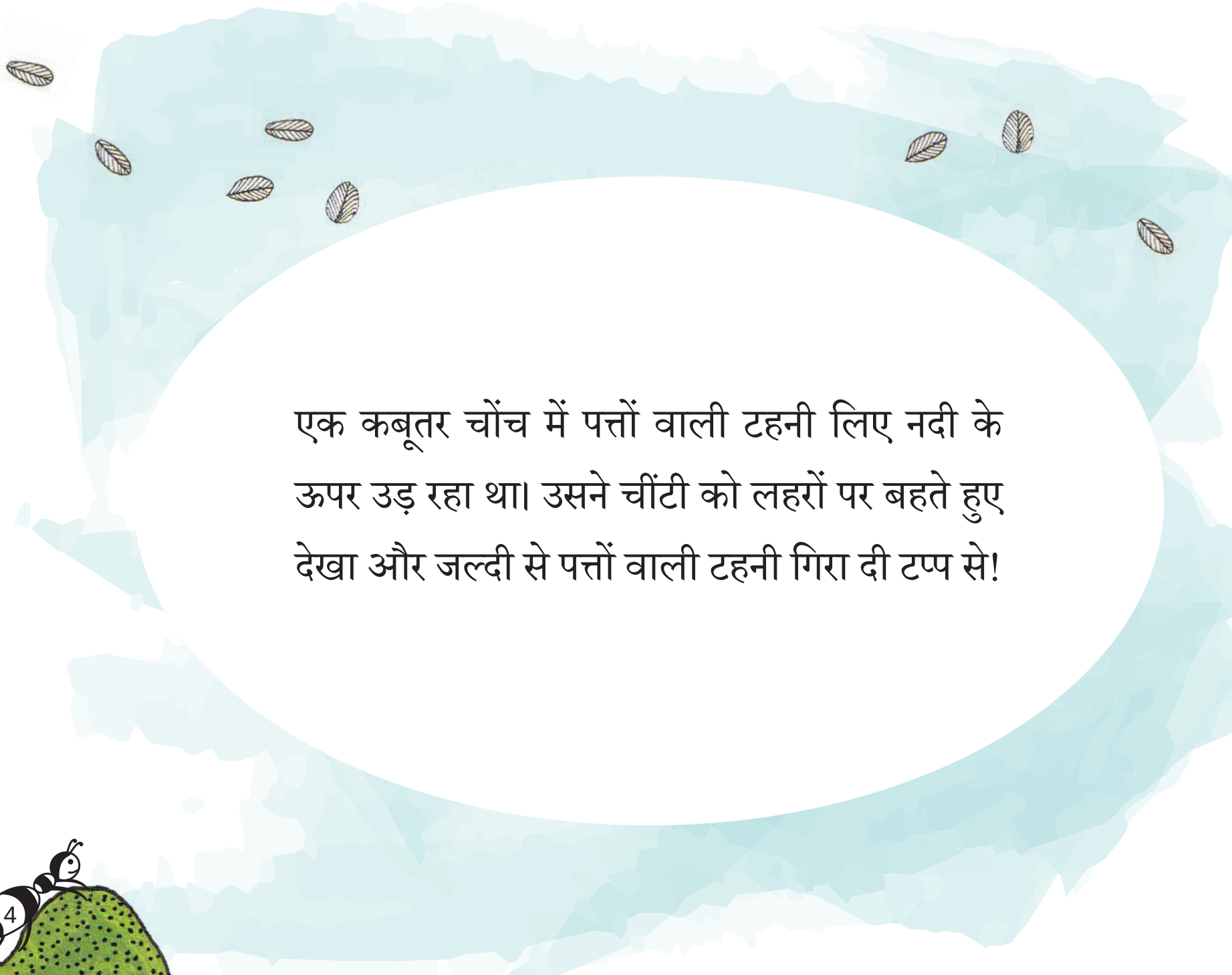
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



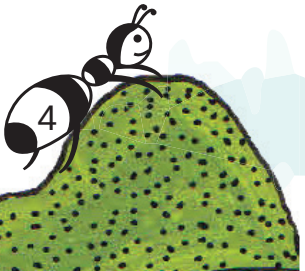
पहाड़ियों के बीच एक नदी बहती थी। नदी में ढेर सारे कछुए और मछलियाँ तैरते रहते थे। नन्हीं चींटी उनसे खूब बातें करती। बातें करते-करते एक दिन उसका पैर फिसला और वह जा गिरी नदी के पानी में छम्म से! और लहरों के साथ बहने लगी।

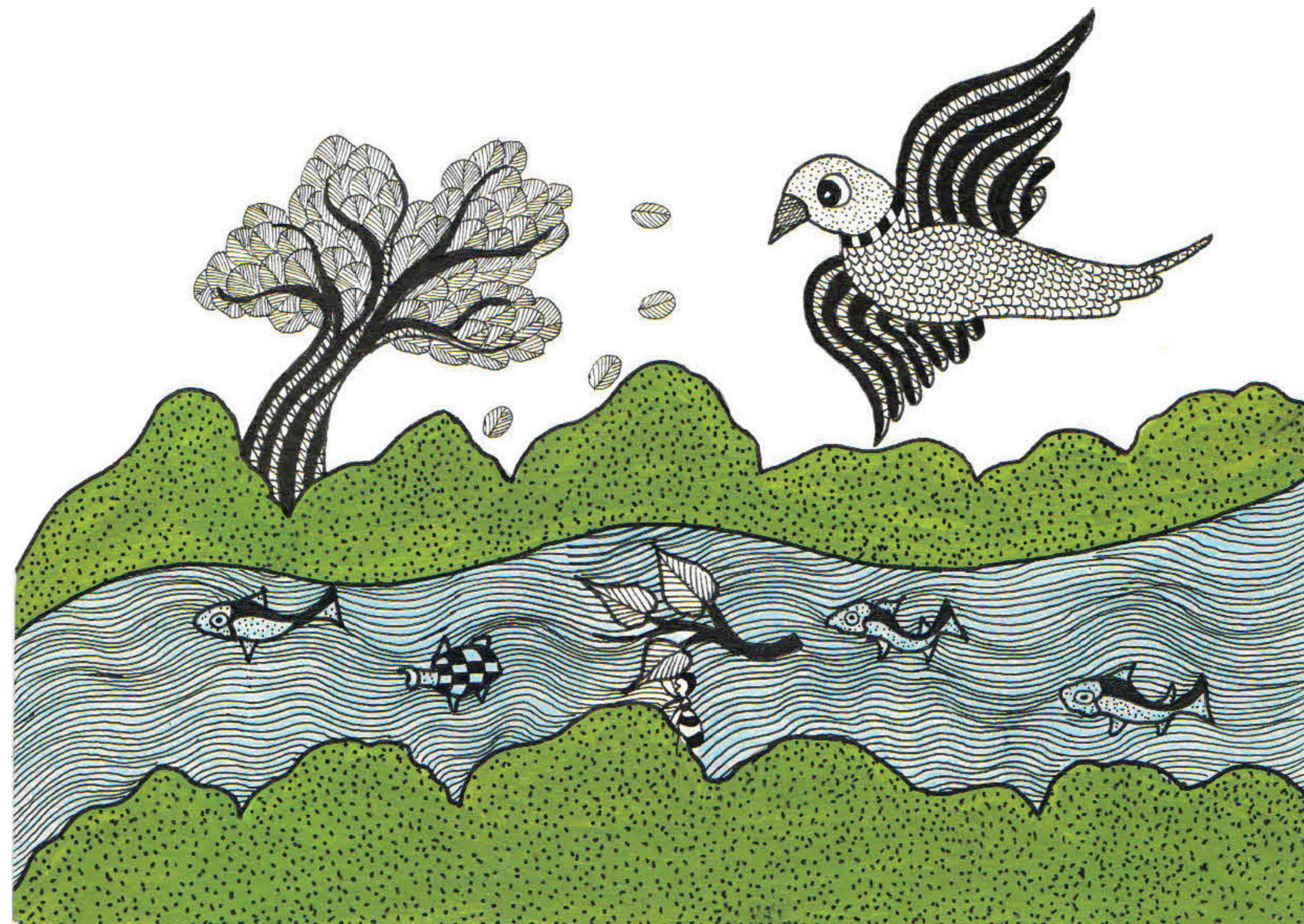


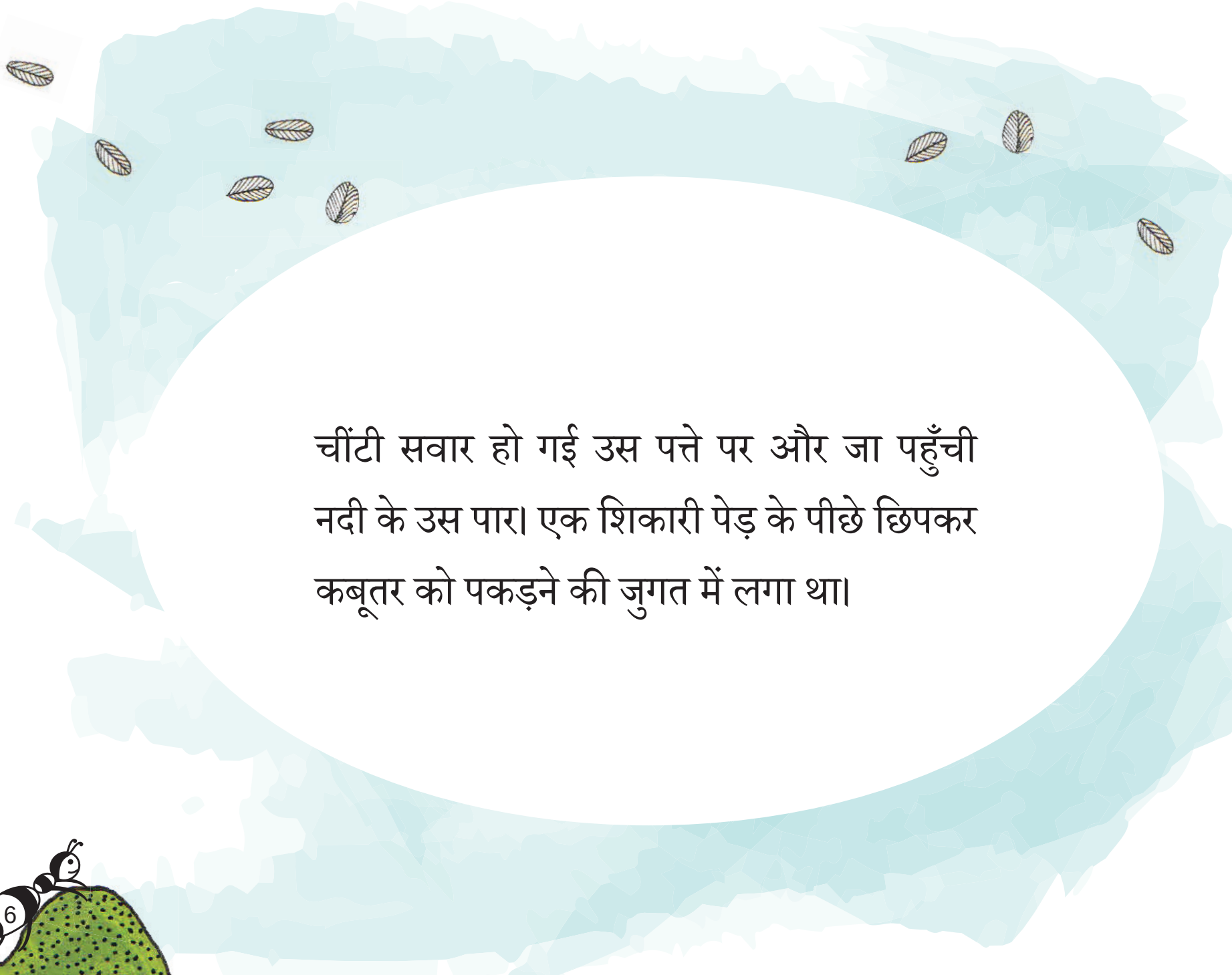




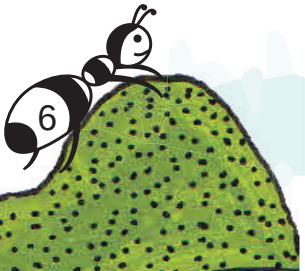
एक कबूतर चोंच में पत्तों वाली टहनी लिए नदी के
ऊपर उड़ रहा था। उसने चींटी को लहरों पर बहते हुए
देखा और जल्दी से पत्तों वाली टहनी गिरा दी टप्प से!

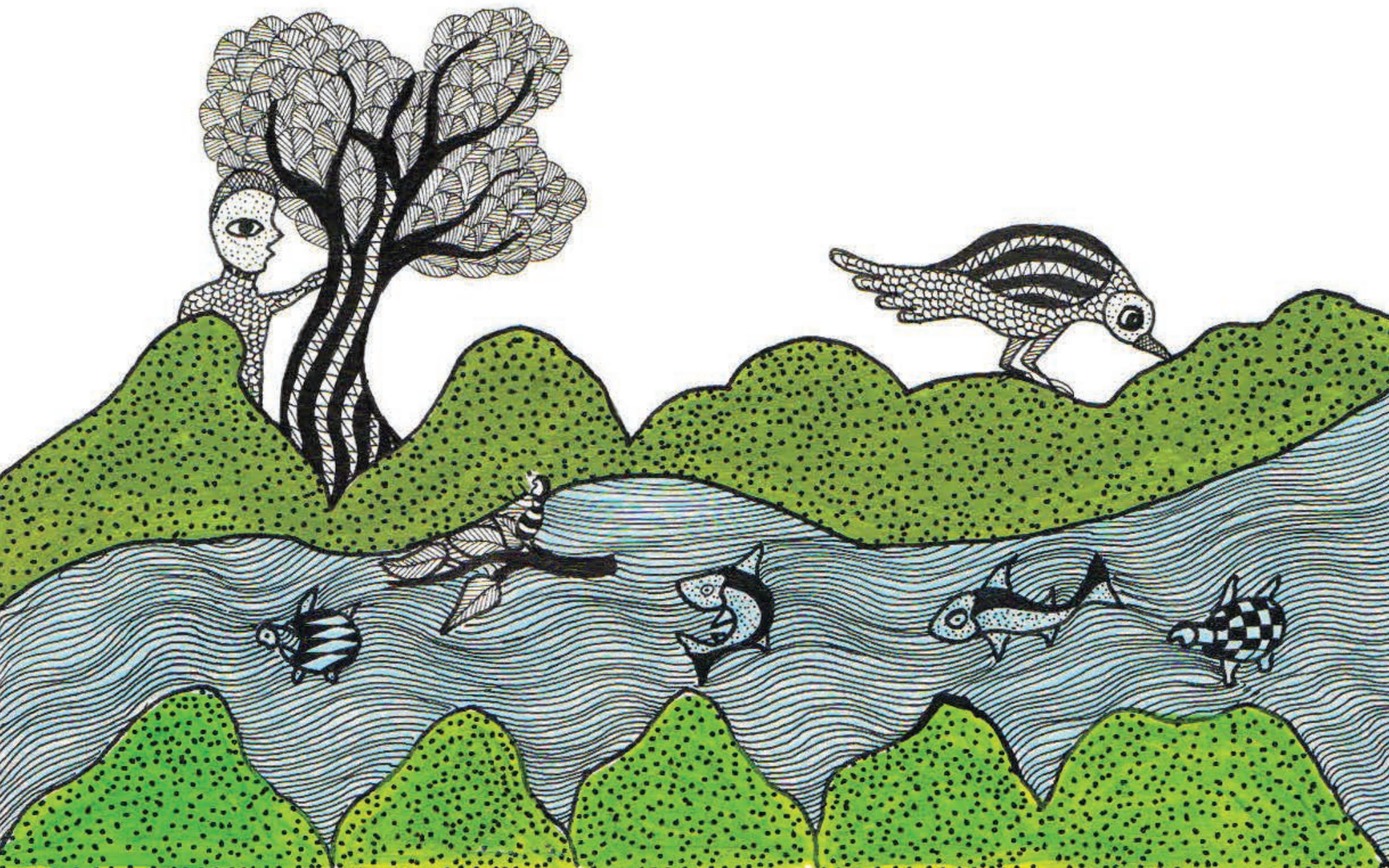


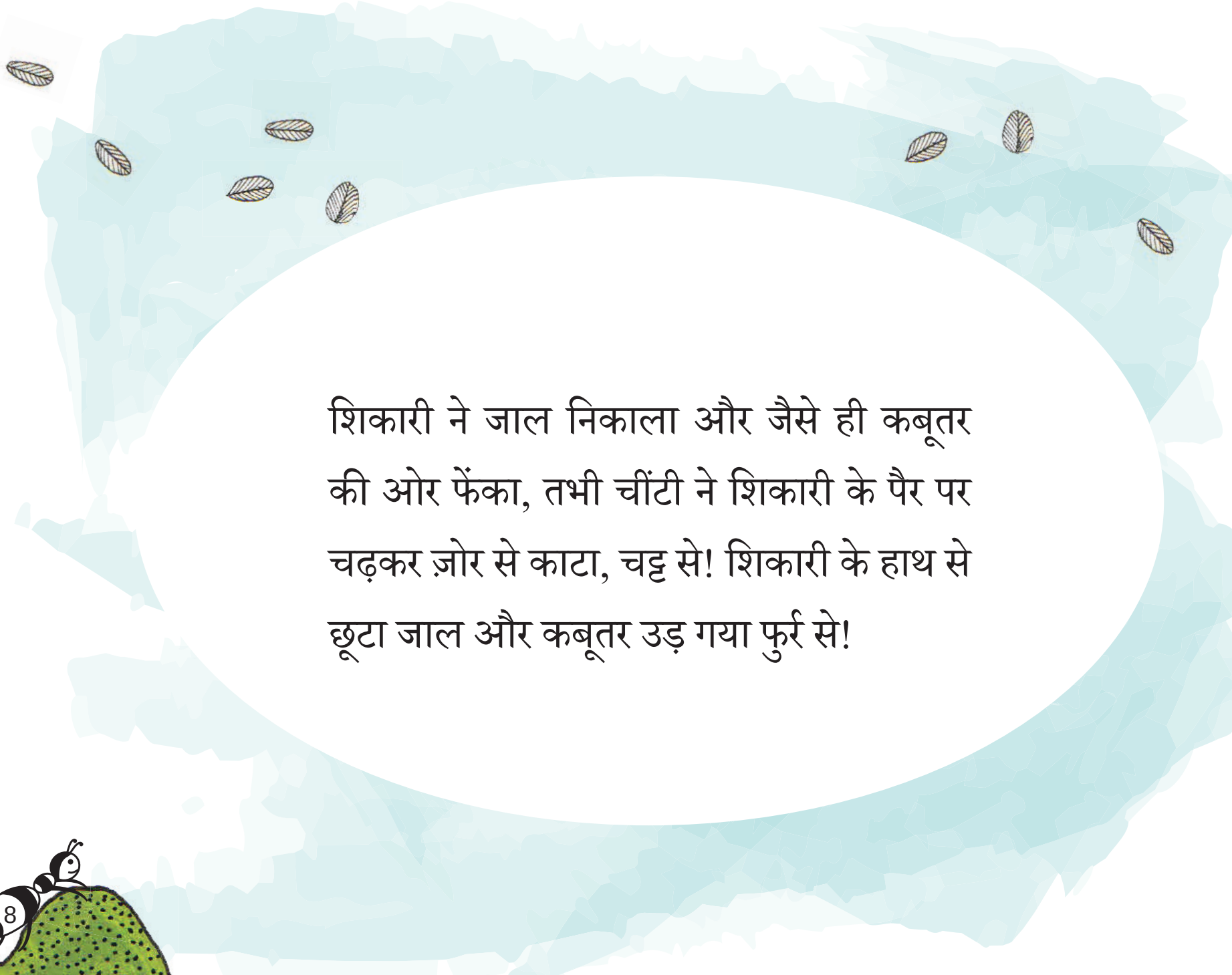




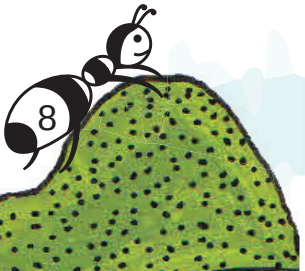
चींटी सवार हो गई उस पत्ते पर और जा पहुँची
नदी के उस पार। एक शिकारी पेड़ के पीछे छिपकर
कबूतर को पकड़ने की जुगत में लगा था।







शिकारी ने जाल निकाला और जैसे ही कबूतर
की ओर फेंका, तभी चींटी ने शिकारी के पैर पर
चढ़कर ज़ोर से काटा, चट्ट से! शिकारी के हाथ से
छूटा जाल और कबूतर उड़ गया फुर्र से!





लेखिका



उषा शर्मा

आचार्य उषा शर्मा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) के राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ की प्रभारी के रूप में एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं। आचार्य उषा शर्मा तीन दशकों से अधिक समय से बच्चों की शिक्षा के लिए काम कर रही हैं। प्रारंभिक स्तर पर भाषा-शिक्षा, बुनियादी साक्षरता (पढ़ना-लिखना), बाल साहित्य, प्रौढ़ शिक्षा, आदि विषयों में इनकी विशेषज्ञता है। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक एवं विभिन्न प्रकार की संसाधन सामग्री निर्माण में अहम भागीदारी रही है। आचार्य उषा शर्मा रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका *फिरकी बच्चों की* एवं शोध पत्रिका *प्राथमिक शिक्षक* की अकादमिक संपादक भी हैं।

चित्रांकन

मानसिंह व्याम

भोपाल के रहने वाले मानसिंह व्याम गोंड लोक शैली में पिछले 10 वर्षों से चित्रकारी कर रहे हैं। उन्होंने गोंड कला अपने माता-पिता से सीखी जो स्वयं भी गोंड शैली के कलाकार हैं। मानसिंह भारत के साथ-साथ जापान, फ्रांस, जर्मनी जैसे देशों में अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं और प्रदर्शनियों में भाग ले चुके हैं। कलाकार के तौर पर मान सिंह ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, मध्य प्रदेश और मध्य प्रदेश जन-जातीय संग्रहालय में काम किया है। इन्होंने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) जैसे प्रकाशनों के साथ पत्रिकाओं व किताबों के लिए चित्रांकन किया है। मानसिंह व्याम अपनी सधी हुई बारीक रेखाओं के लिए जाने जाते हैं।



1 कुछ हम कहें, कुछ तुम कहो!

क. नन्हीं चींटी कछुओं और मछलियों से खूब बातें करती थी।

- चींटी कछुओं और मछलियों से क्या बातें करती होगी?
- आप कछुओं और मछलियों से क्या बातें करते?
- कछुए और मछलियों में कौन-सी बातें एक जैसी हैं?
- कछुए और मछलियों में कौन-सी बातें अलग हैं?

ख. कहानी में किसने किसकी जान बचाई और कैसे?

2 छम्म, टप्प, चट्ट, फुर्र!

क. कहानी में से खोजकर बताइए —

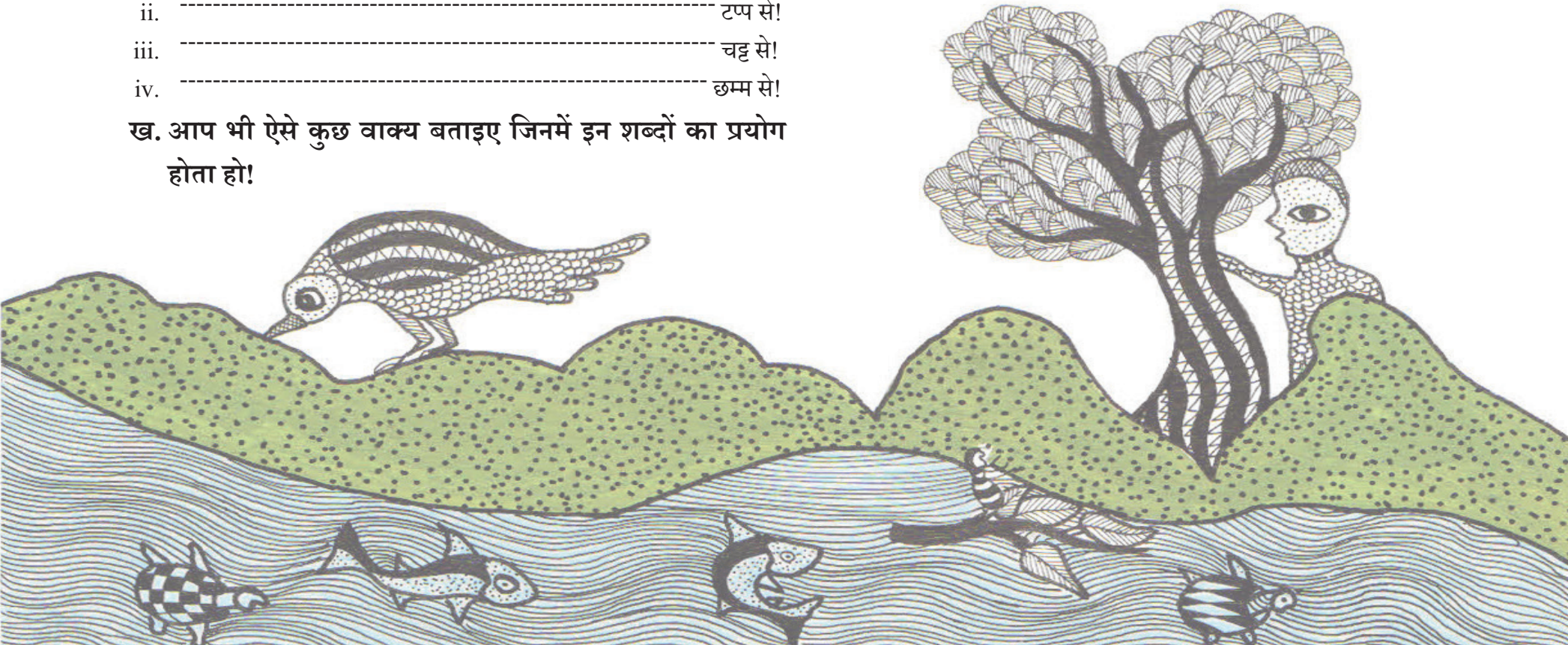
- फुर्र से!
- टप्प से!
- चट्ट से!
- छम्म से!

ख. आप भी ऐसे कुछ वाक्य बताइए जिनमें इन शब्दों का प्रयोग होता हो!

ग. नीचे दी गई बातों के लिए क्या कहेंगे? बताइए —

पट्ट से! धम्म से ! खट से!

- रमा ने खिड़की खोल दी।
- उदय ने दरवाज़ा बंद कर दिया।
- मीना से पेड़ से नीचे कूद गई।



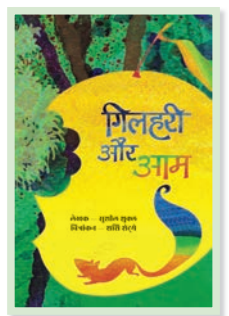
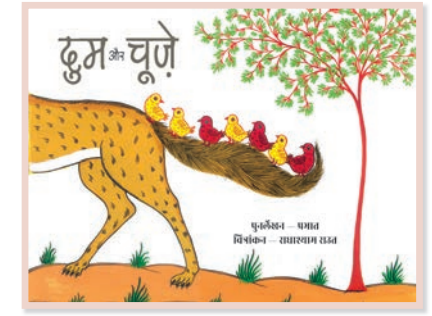
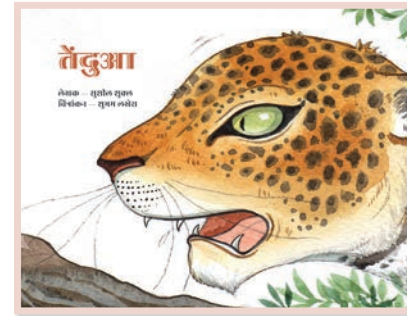
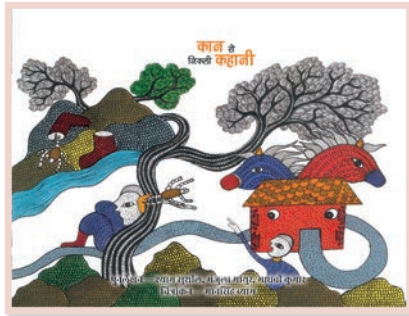
गोंड चित्रकला

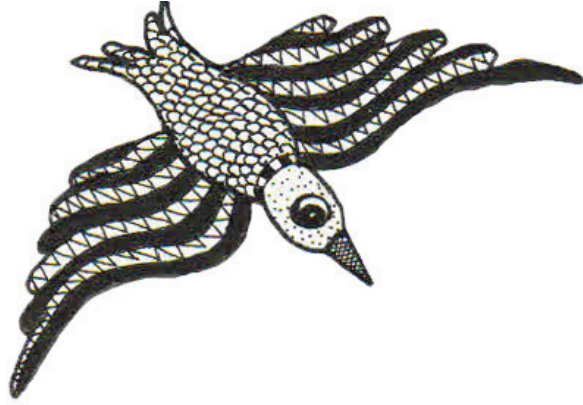
गोंड चित्रकला मध्य प्रदेश की एक प्रसिद्ध जनजाति गोंड द्वारा बनाई गई चित्रकला की विशिष्ट कला शैली है। चटख रंगों से बनाई गई बारीक धारियाँ और छोटे-छोटे बिंदु बहुत सुंदर दिखते हैं। कागज़ और कैनवस पर प्रकृति के हर पक्ष को बहुत सुंदर ढंग से चित्रित किया जाता है। आप राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका *फिरकी बच्चों की* और कैलेंडर पोस्टर्स में गोंड चित्रकला का आनंद ले सकते हैं।



(साभार — फिरकी बच्चों की, वर्ष 6, अंक 1)

और भी हैं मजेदार कहानियाँ...





असंख्य वृत्तांत प्राप्त करने
के लिए स्कैन एवं डाउनलोड करें
राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय -
आपका डिजिटल पुस्तकालय!



21204

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



ISBN 978-93-5292-673-2